राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

अप्रैल , 2024 संस्करण

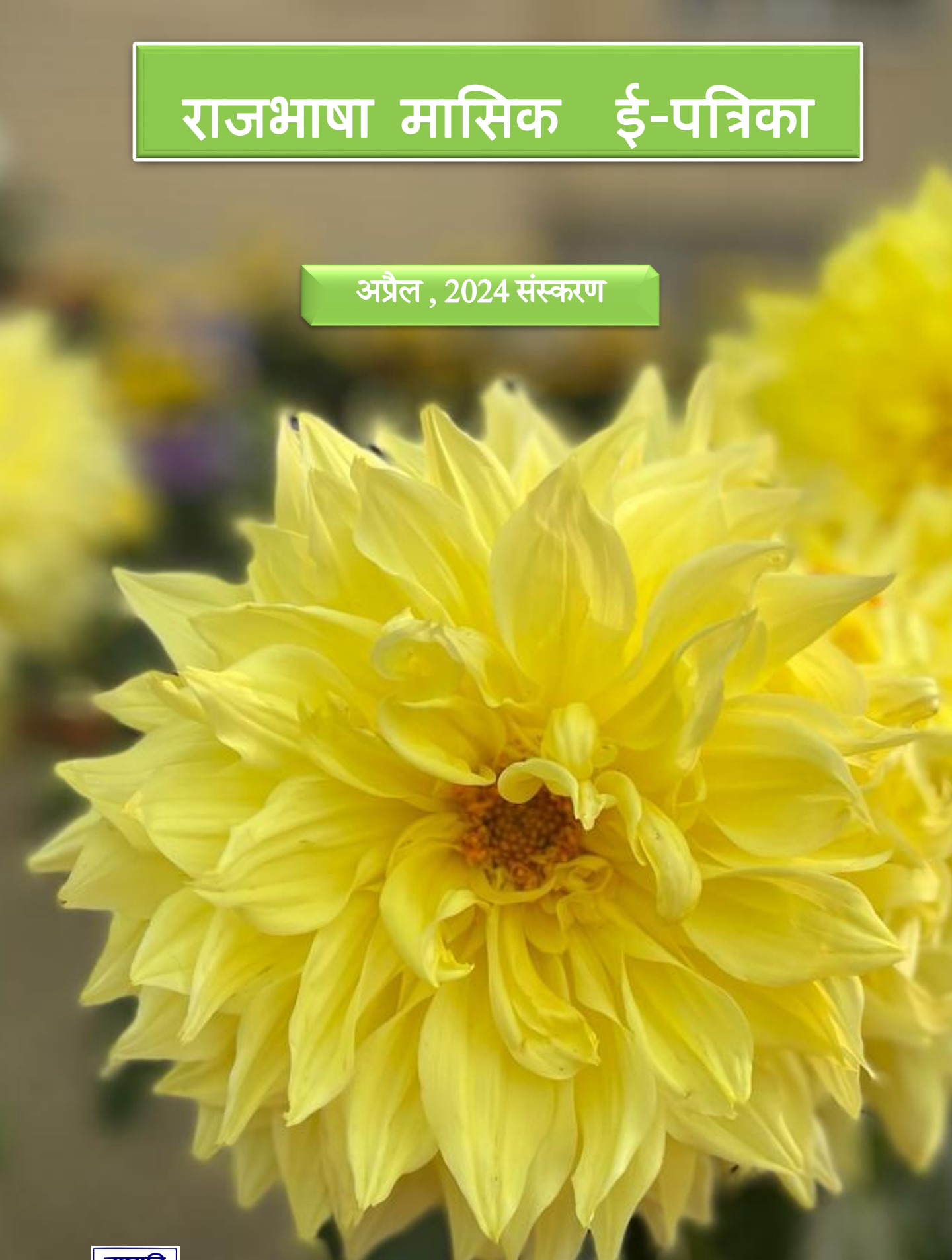

दामोदर घाटी निगम

साम्राज्य से सौराज्य तक

जगजीवन राम

जगजीवन राम आधुनिक भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष के रूप में माना जाते हैं तथा प्रेम से उन्हें 'बाबूजी' के नाम से संबोधित किया जाता हैं ।

बाबू जगजीवन राम का जन्म 5 अप्रैल 1908 को बिहार में भोजपुर के चंदवा गांव में हुआ था। इन्होंने स्नातक की डिग्री कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1931 में ली। लगभग 50 वर्षो के संसदीय जीवन में राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण और निष्ठा बेमिसाल है। उनका संपूर्ण जीवन राजनीतिक, सामाजिक सक्रियता और विशिष्ट उपलब्धियों से भरा हुआ है। सदियों से शोषण और उत्पीड़ित दलितों, मज़दूरों के मूलभूत अधिकारों की रक्षा के लिए जगजीवन राम द्वारा किए गए क़ानूनी प्रावधान ऐतिहासिक हैं। जगजीवन राम का ऐसा व्यक्तित्व था जिसने कभी भी अन्याय से समझौता नहीं किया और दलितों के सम्मान के लिए हमेशा संघर्षरत रहे। विद्यार्थी जीवन से ही उन्होंने अन्याय के प्रति आवाज़ उठायी। बाबू जगजीवन राम का भारत में संसदीय लोकतंत्र के विकास में महती योगदान है। एक दलित के घर में जन्म लेकर राष्ट्रीय राजनीति के क्षितिज पर छा जाने वाले बाबू जगजीवन राम का जन्म बिहार की उस धरती पर हुआ था जिसकी भारतीय इतिहास और राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने कोलकाता में उनके काम को सराहा जब 1928 में उन्होंने वेलिंगटन स्क्वायर पर एक मजदूर रैली का आयोजन किया, जिसमें लगभग 50,000 लोगों ने भाग लिया। जब 1934 में नेपाल-बिहार में विनाशकारी भूकंप आया तो वह राहत कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल हो गए और उनके प्रयासों की सराहना की गई। वह 1952 में पहले चुनाव से लेकर 1986 में अपनी मृत्यु तक, चालीस से अधिक वर्षों तक सांसद रहने के बाद, संसद सदस्य बने रहे । वह बिहार के सासाराम संसदीय क्षेत्र से चुने गए थे। 1936 से 1986 तक संसद में उनका निर्बाध प्रतिनिधित्व एक विश्व रिकॉर्ड है।

इस माह के चयनित साहित्यकार

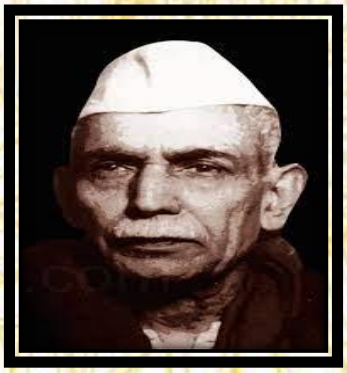

माखनलाल चतुर्वेदी

राष्ट्रीय भावना और ओज के कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के बावई में हुआ। आरंभिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई, जिसके उपरांत अध्यापन और साहित्य-सृजन से संलग्न हुए।

1913 में उन्होंने 'प्रभा' पत्रिका का संपादन शुरू किया और इसी क्रम में गणेश शंकर विद्यार्थी के संपर्क में आए, जिनके देश-प्रेम और सेवाव्रत का उनपर गहन प्रभाव पड़ा। 1921 के असहयोग आंदोलन के दौरान राजद्रोह के आरोप में सरकार ने कारागार में डाल दिया जहाँ से एक वर्ष बाद मुक्ति मिली। 1924 में गणेश शंकर विद्यार्थी की गिरफ़्तारी पर 'प्रताप' का संपादन सँभाला। कालांतर में 'संपादक सम्मेलन' और 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष भी रहे।

उनकी सृजनात्मक यात्रा के तीन आयाम रहे—एक, पत्रकारिता और संपादन जहाँ उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का जागरण किया; दूसरा, साहित्य-सृजन, जहाँ काव्य, निबंध, नाटक, कहानी आदि विधाओं में मौलिक लेखन के साथ युगीन संवाद और सर्जनात्मकता का विस्तार किया; और तीसरा, उनके व्याख्यान, जहाँ प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक-साहित्यिक-राजनीतिक प्रश्नों से दो-चार हुए।

'हिमकिरीटिनी', 'हिमतरंगिनी', 'युग चरण', 'समर्पण', 'मरण ज्वार', 'माता', 'वेणु लो गूँजे धरा', 'बीजुरी काजल ओंज रही' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ हैं। 'कृष्णार्जुन युद्ध', 'साहित्य के देवता', 'समय के पाँव', 'अमीर इरादे :ग़रीब इरादे' आदि उनकी प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ हैं। 'माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली' में उनकी रचनात्मक कृतियों का संकलन किया गया है।

1943 में उन्हें 'देव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया जो उस समय साहित्य का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार था। 1953 में साहित्य अकादेमी की स्थापना के बाद इसका पहला साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1955 में उन्हें ही प्रदान किया गया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया और उन पर डाक-टिकट जारी किया।

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का महत्व

रंजीत कुमार चौबे
वरिष्ठ प्रबंधक (संरक्षा) / संरक्षा प्रमुख
सी टी पी एस, दाघानि,चंद्रपुरा

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा सिर्फ "अच्छा होना" नहीं है; यह संगठन की निचली रेखा को प्रभावित करता है। उच्च स्तर की लगातार मनोवैज्ञानिक सुरक्षा होने से उद्यम में सभी प्रतिभाओं के योगदान को अनलॉक करने में मदद मिलती है और यह सुनिश्चित होता है कि संगठन विफलता को रोकने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित है।

शोध में बार-बार पाया गया है कि संगठनों को विचारों की विविधता से लाभ होता है, और विभिन्न जीवन अनुभव वाले लोगों के समूह समान जीवन अनुभव वाले समूहों की तुलना में समस्याओं को पहचानने और रचनात्मक समाधान पेश करने में बेहतर सक्षम होते हैं।

लेकिन क्या होगा अगर टीम के कुछ सदस्य बोलने में सहज महसूस नहीं करते? क्या होगा यदि वे अपना दृष्टिकोण साझा करने, चिंताएँ उठाने या चुनौतीपूर्ण प्रश्न पूछने से डरते हैं? क्या होगा यदि वे नए और अभिनव विचारों का सुझाव देने से बचते हैं क्योंकि वे परिणामों के बारे में चिंतित हैं?

दुर्भाग्य से, बहुत से लोग अपने कार्यस्थल के बारे में ऐसा ही सोचते हैं। 2019 गैलप पोल के अनुसार , 10 में से केवल 3 कर्मचारी दृढ़ता से सहमत थे कि उनकी राय काम पर मायने रखती है।

कार्यस्थल में उच्च स्तर की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा महसूस करना उन सामाजिक पहचान समूहों के सदस्यों के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है जिन्हें अक्सर समाज द्वारा हाशिए पर रखा जाता है। उदाहरण के लिए, कैटलिस्ट के एक हालिया सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग आधी महिला बिजनेस लीडर्स को वर्चुअल मीटिंग्स में बोलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और 5 में से 1 ने वीडियो कॉल के

दौरान खुद को नजरअंदाज या उपेक्षित महसूस करने की बात कही। जो लोग ऐतिहासिक रूप से कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के सदस्य हैं वे इस वास्तविकता को और भी अधिक गहराई से महसूस कर सकते हैं।

जिन सहकर्मियों को लगता है कि उनके काम का माहौल मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित है, वे पारस्परिक जोखिम लेने वाले व्यवहार में संलग्न होने के लिए अधिक इच्छुक हैं जो अधिक संगठनात्मक नवाचार में योगदान करते हैं - जैसे बोलना, प्रश्न पूछना, अनकही आपत्तियों को साझा करना और सम्मानपूर्वक असहमत होना। यह अंततः एक अधिक मजबूत, गतिशील, नवीन और समावेशी संगठनात्मक संस्कृति उत्पन्न करता है।

इसके विपरीत, जब काम पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा कम होती है और लोग चिंताओं को उठाने में असहज होते हैं, तो जो पहल काम नहीं कर रही होती हैं, वे वैसे भी आगे बढ़ती हैं, संगठन विफलता को रोकने के लिए सुसज्जित नहीं होता है, और प्रतिभाएं अलग होने लगती हैं। जब कर्मचारी साझा संगठनात्मक सफलता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध नहीं होते हैं, विचारों का तनाव-परीक्षण नहीं किया जाता है, प्रक्रियाओं को अनुकूलित नहीं किया जाता है, समाधानों की जांच नहीं की जाती है, और उद्यम ने अपनी सभी प्रतिभाओं के योगदान का लाभ उठाने का अवसर खो दिया है।

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा क्या है?

मनोवैज्ञानिक सुरक्षा यह विश्वास है कि विचारों, प्रश्नों, चिंताओं या गलतियों के बारे में बोलने पर आपको दंडित या अपमानित नहीं किया जाएगा। कार्यस्थल पर, टीम के सदस्यों द्वारा यह साझा अपेक्षा की जाती है कि टीम के साथी विचार साझा करने, जोखिम लेने या प्रतिक्रिया मांगने के लिए उन्हें शर्मिंदा, अस्वीकार या दंडित नहीं करेंगे।

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का मतलब यह नहीं है कि हर कोई हर समय एक-दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करे। इसका मतलब यह है कि लोग स्वतंत्र महसूस करते हैं "ज़ोर से विचार-मंथन करते हैं", आधे-अधूरे विचारों को आवाज़ देते हैं, यथास्थिति को खुले तौर पर चुनौती देते हैं, प्रतिक्रिया साझा करते हैं, और असहमति के माध्यम से एक साथ काम करते हैं - यह जानते हुए कि नेता ईमानदारी, स्पष्टवादिता और

सच बोलने को महत्व देते हैं, और वह टीम सदस्य एक-दूसरे का समर्थन करेंगे।

जब कार्यस्थल में मनोवैज्ञानिक सुरक्षा मौजूद होती है, तो लोग अपने पूर्ण, प्रामाणिक स्व को काम पर लाने में सहज महसूस करते हैं और दूसरों के सामने "खुद को लाइन में लगाने" में भी सहज महसूस करते हैं। और मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित कार्य वातावरण वाले संगठन - जहां कर्मचारी साहसिक प्रश्न पूछने, चिंताएं साझा करने, मदद मांगने और परिकलित जोखिम लेने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं - इसके लिए सभी बेहतर हैं।

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा बनाने की दिशा में 8 महत्वपूर्ण कदम :

1. मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को स्पष्ट प्राथमिकता दें।

कार्यस्थल पर मनोवैज्ञानिक सुरक्षा बनाने के महत्व के बारे में अपनी टीम से बात करें। इसे अधिक संगठनात्मक नवाचार, टीम सहभागिता और समावेशन के उच्च उद्देश्य से जोड़ें। जब आपको मदद की ज़रूरत हो तो मांगें और मांगे जाने पर खुलकर मदद दें। उन व्यवहारों को मॉडल करें जिन्हें आप देखना चाहते हैं, और समावेशी नेतृत्व प्रथाओं का उपयोग करके मंच तैयार करें ।

2. हर किसी को बोलने में सुविधा प्रदान करें।

सच्ची जिज्ञासा दिखाएँ, और स्पष्टता और सच बोलने का सम्मान करें। जब कोई व्यक्ति यथास्थिति को चुनौती देते हुए कुछ कहने के लिए पर्याप्त साहसी हो तो खुले विचारों वाले, दयालु और सुनने को तैयार रहें। कोचिंग संस्कृति वाले संगठनों में सच बोलने का साहस रखने वाले टीम सदस्यों की संभावना अधिक होगी ।

3. विफलता से कैसे निपटा जाता है इसके लिए मानदंड स्थापित करें।

प्रयोग और (उचित) जोखिम लेने की सज़ा न दें। इस बात को पहचानें कि गलतियाँ विकास का एक अवसर हैं। विफलता और निराशा से सीखने को प्रोत्साहित करें, और गलतियों से सीखे गए कठिन परिश्रम से प्राप्त सबक को खुलकर साझा करें। इससे नवाचार को नुकसान पहुंचाने के बजाय उसे प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी । निराशा (और प्रशंसा) व्यक्त करते समय स्पष्टवादिता का प्रयोग करें।

4. नए विचारों (यहां तक कि जंगली विचारों) के लिए जगह बनाएं।

समर्थन के व्यापक संदर्भ में कोई भी चुनौती प्रदान करें। विचार करें कि क्या आप केवल ऐसे विचार चाहते हैं जिनका पूरी तरह से परीक्षण किया गया हो, या क्या आप अत्यधिक रचनात्मक, आउट-ऑफ़-द-बॉक्स विचारों को स्वीकार करने के इच्छुक हैं जो अभी तक अच्छी तरह से तैयार नहीं हुए हैं। कठिन प्रश्न पूछना ठीक है; लेकिन एक ही समय में हमेशा सहयोगी बने रहते हुए ऐसा करें। अपनी टीम में अधिक नवोन्वेषी मानसिकता को बढ़ावा देने के तरीके के बारे में और जानें।

5. उत्पादक संघर्ष को अपनाएं।

ईमानदार संवाद और रचनात्मक बहस को बढ़ावा दें, और संघर्षों को उत्पादक ढंग से हल करने के लिए काम करें । मनोवैज्ञानिक सुरक्षा में योगदान देने वाले कारकों के लिए टीम की अपेक्षाओं को स्थापित करके वृद्धिशील परिवर्तन के लिए मंच तैयार करें। अपनी टीम के साथ निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें:

जो प्रक्रिया काम नहीं कर रही है, उसके बारे में टीम के सदस्य अपनी चिंताओं के बारे में कैसे बताएंगे?

सहकर्मियों के साथ सम्मानजनक तरीके से आरक्षण कैसे साझा किया जा सकता है?

परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों के प्रबंधन के लिए हमारे मानदंड क्या हैं?

6. बारीकी से ध्यान दें और पैटर्न देखें।

टीम के सदस्यों की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के कथित पैटर्न पर ध्यान दें , न कि केवल समग्र स्तर पर। क्या कुछ सदस्यों को दूसरों की तुलना में काफी अधिक या कम मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का अनुभव होता है, या टीम भर में स्तर काफी समान है?

हर किसी के लिए लगातार मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की वकालत करें, न कि केवल "अच्छा होना" के रूप में - यह निचली पंक्ति के लिए मायने रखता है।

टीम की मनोवैज्ञानिक सुरक्षा बढ़ाने के लिए रणनीति विकसित करते समय टीम की वर्तमान मान्यताओं पर विचार करें, क्योंकि एक आकार सभी के लिए उपयुक्त नहीं है।

7. संवाद को बढ़ावा देने के लिए जानबूझकर प्रयास करें।

प्रतिक्रिया देने और प्राप्त करने के कौशल को बढ़ावा देना, और लोगों के लिए चिंताएँ व्यक्त करने के लिए जगह बनाना। सहकर्मियों से शक्तिशाली, खुले अंत वाले प्रश्न पूछें, और फिर उनकी भावनाओं और मूल्यों, साथ ही तथ्यों को समझने के लिए सक्रिय रूप से और ध्यान से सुनें । यह सीखने के अवसर प्रदान करें कि एक-दूसरे को रचनात्मक प्रतिक्रिया कैसे साझा करें और सम्मानजनक प्रतिक्रियाएँ कैसी दिखती हैं।

आप पूरे संगठन में बातचीत की गुणवत्ता को मजबूत करने के लिए निवेश पर विचार करना चाह सकते हैं, क्योंकि वस्तुतः, बेहतर बातचीत से बेहतर संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा । फीडबैक वार्तालाप में बेहतर कौशल, मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित कार्य वातावरण के साथ मिलकर, ऐसे सहयोगियों को तैयार करेगा जो एक-दूसरे के साथ अनकही आपत्तियों को साझा करने के लिए अधिक इच्छुक होंगे और ऐसे समाधान प्रस्तावित करेंगे जिनका कार्यान्वयन से पहले अधिक कठोरता से तनाव-परीक्षण किया जाएगा।

8. जीत का जश्न मनाएं ।

जो अच्छा चल रहा है उसे नोटिस करें और स्वीकार करें। व्यक्तियों के बीच सकारात्मक बातचीत और बातचीत विश्वास और आपसी सम्मान पर आधारित होती है। इसलिए श्रेय साझा करें और कई लोगों के बीच विशेषज्ञता को अपनाएं, और एकल "नायक" मानसिकता के विपरीत सामूहिक सफलता प्राप्त करें।

जो अच्छा चल रहा है उसका जश्न मनाएं, भले ही वह छोटा ही क्यों न हो, और लोगों के प्रयासों की सराहना करें। प्रोत्साहित करना और आभार व्यक्त करना आपकी टीम के सदस्यों की आत्म-भावना को मजबूत करता है। अपनी टीम के सदस्यों को संदेह का लाभ दें जब वे जोखिम लेते हैं, मदद मांगते हैं, या गलती स्वीकार करते हैं। बदले में, भरोसा रखें कि वे आपके लिए भी ऐसा ही करेंगे।

~~~***~~~***~~~
~~~

होली

देवयानी मल्लिक
कार्यपालक(राजभाषा),
कोलकाता

भारत में अलग-अलग राज्यों में होली कई तरह से मनाई जाती है । होली एक ऐसा त्योहार है, जो अलग-अलग प्रदेशों और स्थानों पर विभिन्न परंपराओं के साथ मनाया जाता है । भारत को विविधताओं का देश कहा जाता है । यहां स्थान बदलने के साथ-साथ बोली, परंपराएं और रहन-सहन का तरीका भी बदल जाता है । हर जगह पर्व मनाने का अंदाज व परंपराएं भी अलग-अलग हैं । होली एक ऐसा त्योहार है, जो अलग-अलग प्रदेशों और स्थानों पर विभिन्न परंपराओं के साथ मनाया जाता है ।

प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णिमा को होलिका दहन किया जाता है और इसके अगले दिन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को रंग वाली होली खेली जाती है ।

प्राचीनकाल में होली को होलाका के नाम से जाना जाता था और इस दिन आर्य नवात्रैष्टि यज्ञ करते थे । इस पर्व में होलका नामक अन्न से हवन करने के बाद उसका प्रसाद लेने की परंपरा रही है । होलिका दहन के बाद "रंग उत्सव" मनाने की परंपरा भगवान श्रीकृष्ण के काल से प्रारम्भ हुई । तभी से इसका नाम फगवाह हो गया, क्योंकि यह फागुन माह में आती है । वक्त के साथ सभी राज्यों में होली को मनाने और उसको स्थानीय भाषा में अन्य नाम से पुकारने लगे । प्राचीन भारतीय मंदिरों की दीवारों पर होली उत्सव से संबन्धित विभिन्न मूर्ति या चित्र अंकित पाए जाते है । अहमदनगर चित्रों और मेवाड़ के चित्रों में भी होली उत्सव का चित्रण मिलता है । ज्ञात रूप से यह त्योहार 600 ईसा पूर्व से मनाया जाता रहा है । सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों में भी होली और दिवाली मनाए जाने के सबूत मिलते हैं । बिहार और उत्तर प्रदेश में होली को फगुआ, फाग और लठमार होली कहते हैं । खासकर मथुरा, नंदगांव, गोकुल, वृन्दावन और बरसाना में इसकी धूम होती है ।

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में होली वाले दिन होलिका दहन होता है, दूसरे दिन धुलैंडी मनाते हैं और पांचवे दिन रंग पंचमी मनाते हैं । यहाँ के आदिवासियों में होली की ख़ासी धूम होती है ।
महाराष्ट्र में होली को "फाल्गुन पूर्णिमा" और "रंग पंचमी" के नाम से जानते हैं । गोवा के मछुआरा समाज इसे शिमगो या शिमगा कहता है । गोवा की स्थानीय कोंकणी भाषा में शिमगो कहा जाता है । गुजरात में गोविंदा होली कि ख़ासी धूम होती है ।
हरियाणा में होली को दुलंडी या धुलैंडी के नाम से जानते है । पंजाब में होली को होला मोहल्ला कहते हैं ।
पश्चिम बंगाल और ओड़ीशा में होली को "बसंत उत्सव" और "दोल पूर्णिमा" के नाम से जाना जाता है।
तमिलनाडु में लोग होली को कामदेव के बलिदान के रूप में याद करते हैं । इसीलिए यहाँ पर होली को कमान पंडिगई, कामाविलास और कामा-दाहानाम कहते हैं। कर्नाटक में होली के पर्व को कामना हब्बा के रूप में मनाते हैं । आंध्र प्रदेश, तेलंगना में भी ऐसी ही होली होती है ।

मणिपुर में इसे योशांग या याओसांग कहते हैं । यहा धुलेंडी वाले दिन चकारी कहा जाता है । असम इसे "फगवाह" या "देओल" कहते हैं । त्रिपुरा, नागालैंड, सिक्किम और मेघालय में भी होली की धूम रहती है ।

यहा होली को भिन्न प्रकार के संगीत समारोह के रूप में मनाया जाता है, जिसे बैठकी होली, खड़ी होली और महिला होली कहते हैं । यहा कुमाउनी होली प्रसिद्ध है।

यह त्योहार भारत के अलावा श्रीलंका, नेपाल व मॉरीशस समेत दुनिया के कई देशों में मनाया जाता है ।

माँ जननी (नारी)

श्रीमती रूम पात्र
फर्मासिस्ट ग्रेड-II
डीवीसी, मैथन डैम

बेटी, पत्नी, माँ बनती है नारी,
उनकी कितनी भूमिका है निराली,
तब क्यों तुम उनको पत्नी बनाकर दहेज के साथ लाते हो,
घर में उनको उत्पीड़न करके,
आत्म हत्या करने तक पहुंचाते हो ।
प्रकृति माँ, धरती माँ, भारत को माँ कहलाते हो,
भारत माँ की जय का नारा तुम ही तो लगाते हो,
नारी का जीवन विचित्र है,
अपने घर को छोड़ आती है,
कभी बनती है पत्नी, कभी बनती है माँ,
वही ममता का आँचल फैलाती है,
कभी वह झाँसी की रानी बनकर
करती है अपनी सुरक्षा,
कभी ज्ञान का देवी सरस्वती बनकर,
देती है ज्ञान की शिक्षा,
जिस नारी तुम्हे जन्म देती है,
अपने कष्ट सहनकर तुम्हे पालते है,
उस नारी को करो सम्मान,
तभी होगा भारत देश महान ।

"आओ मिलकर बोले हम,
ओह! नारी तुम कितना महान ।।"

मेरा जूता

जूते बैठें दरवाजें पर,
झांक़ रहे बैठक खानें मे।
कहते है क्यो- हमे मनाही ?
हरदम ही भीतर आनें मे।
कईं बार धोखें धधें से,
हम भीतर घुस ही ज़ाते है।
लेकिन देख़-देख़ दादी के,
तेवर हम तो डर ज़ाते है।
लगता हैं गुस्सें के मारे,
हमें भिज़ा देगी वह थानें।
उधर चप्पलो का आलम हैं,
बिना डरे बेधडक घूमती।
बैठक़ खाने के, रसोईं के,
शयन क़क्ष के फर्शं चूमती।
घर के लोग़ मजें लेते है,
भीतर चप्पल चटकानें मे।
हम जूतो के कारण ही तो,
पांव सुरक्षित इसानों के।
ठोकर, काटे हम सहतें है,
दांव लगा अपनें प्राणो के।
फिर क्यो? हमे पटक़ देते है।,
गंदे से जूतें खाने मे।

श्री सुमन कुमार
सतर्कता विभाग,
डीवीसी, सीटीपीएस

डीपफेक: आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (एआई) प्रौद्योगिकी का भयावह चेहरा

श्री राम प्रकाश
उप प्रबंधक (विद्युत)
वितरण, मुख्यालय
दामोदर घाटी निगम

डीपफेक एक प्रकार के कृत्रिम मीडिया को दर्शाता है, आमतौर पर वीडियो या ऑडियो, जिसे उन्नत आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक का उपयोग करके बनाया गया है। ये तकनीक यथार्थवादी नकली सामग्री उत्पन्न करने के लिए बड़ी मात्रा में डेटा का विश्लेषण और संश्लेषण करते हैं जिन्हें वास्तविक रिकॉर्डिंग से अलग करना मुश्किल हो सकता है। वीडियो के संदर्भ में, डीपफेक तकनीक किसी व्यक्ति की उपस्थिति और भाषण में बदलाव की अनुमति देती है, अक्सर एक व्यक्ति की समानता और आवाज को दूसरे पर थोप देती है। इस हेरफेर से ऐसा प्रतीत हो सकता है मानो कोई कुछ ऐसा कह रहा है या कर रहा है जो उन्होंने वास्तव में कभी किया ही नहीं।

ध्यान देने वाली बात है कि जब रश्मिका मंदाना जैसी मशहूर अभिनेत्री का वीडियो क्लिप वायरल हो जाता है और बाद में डीपफेक होने का खुलासा होता है तो यह गलत सूचना, गोपनीयता और इस तकनीक के दुरुपयोग की संभावना के बारे में चिंताएं पैदा करती है।

डीपफेक तकनीक के विभिन्न अनुप्रयोग हैं, जिनमें फिल्मों में मनोरंजन और डिजिटल प्रभाव शामिल हैं किन्तु गलत सूचना फैलाने, दर्शकों को धोखा देने और जनता की राय में हेरफेर करने की अपनी क्षमता के कारण लोगों चिंताएं बढ़ाती है। इसका उपयोग मनोरंजन, राजनीतिक हेरफेर, धोखाधड़ी और उत्पीड़न सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है।

इस तकनीक की बढ़ती परिष्कार और पहुंच को देखते हुए, भारत के आगामी आम चुनाव में डीपफेक तकनीक के व्यापक प्रयोग की प्रबल संभावना है। डीपफेक का उपयोग राजनीतिक उम्मीदवारों, पार्टियों और मुद्दों के बारे में गलत या भ्रामक जानकारी फैलाने के लिए किया जा सकता है। इसमें मनगढ़ंत वीडियो या ऑडियो रिकॉर्डिंग शामिल हो सकती हैं जो उम्मीदवारों को ऐसी बातें कहते या करते हुए दर्शाती हैं जो उन्होंने वास्तव में कभी नहीं कीं, जो मतदाताओं की राय और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं। इसके अलावा डीपफेक कुछ आख्यानों को बढ़ावा देकर या विभाजनकारी सामग्री फैलाकर सार्वजनिक विमर्श में हेरफेर कर सकते हैं। इससे मौजूदा सामाजिक तनाव बढ़ सकता है, मतदाताओं का ध्रुवीकरण हो सकता है और चुनावी प्रक्रिया की अखंडता कमजोर हो सकती है।

उपरोक्त चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ संभावित उपायों को सुझाया गया है:

1. **मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना:** आमजन को डीपफेक के अस्तित्व और उन्हें पहचानने के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है। मीडिया साक्षरता कार्यक्रम के जरिये लोगों को डिजिटल सामग्री की विश्वसनीयता का आकलन करने और हेरफेर के संकेतों की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण सोच कौशल सिखाया जा सकता है।

2. **नियामक उपाय:** सरकार ऐसे नियमों और कानूनों को लागू करें जो डीपफेक के निर्माण, वितरण और दुर्भावनापूर्ण उपयोग को संबोधित करते हैं। इसमें डीपफेक तकनीक को शामिल करने के लिए मानहानि, गोपनीयता और बौद्धिक संपदा अधिकारों से संबंधित मौजूदा कानूनों को अद्यतन करना शामिल हो सकता है।

3. **टेक कंपनियों के साथ सहयोग:** डीपफेक सामग्री का पता लगाने और उससे निपटने के लिए टेक कम्पनियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उद्योग मानकों और सर्वोत्तम प्रथाओं को विकसित करने के लिए सरकार, तकनीकी कंपनियों और शोधकर्ताओं के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करें। टेक कम्पनियाँ अपने प्लेटफॉर्म में डिटेक्शन टूल्स को भी एकीकृत कर सकती हैं और दुर्भावनापूर्ण डीपफेक के प्रसार को रोकने के लिए नीतियां लागू कर सकती हैं।

4. **डिटेक्शन टूल विकसित करना:** सरकार उन्नत डिटेक्शन एल्गोरिदम और टूल के अनुसंधान और विकास में निवेश करें जो डीपफेक सामग्री की पहचान और ध्वजांकित कर सकें।

5. **पारदर्शिता और जवाबदेही:** सामग्री निर्माताओं को यह खुलासा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये कि उनकी सामग्री में डिजिटल रूप से हेरफेर किया गया है। हानिकारक डीपफेक बनाने और प्रसारित करने के लिए व्यक्तियों और संगठनों को जिम्मेदार ठहराने से भी दुर्भावनापूर्ण डीपफेक पर काबू पाया जा सकता है।

6. **एआई अनुसंधान में निवेश:** सरकार को चाहिए कि एआई प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान और विकास में निवेश करें जो प्रामाणिक और हेरफेर किए गए मीडिया के बीच अंतर करने में मदद कर सकते हैं। इसमें फोरेंसिक विश्लेषण और डिजिटल सामग्री के प्रमाणीकरण के लिए एआई एल्गोरिदम विकसित करना शामिल है।

7. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** डीपफेक खतरों की वैश्विक प्रकृति को संबोधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहयोग को बढ़ावा देने कि जरुरत है। इसमें सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना, सूचनाओं का आदान-प्रदान करना और सीमाओं के पार दुर्भावनापूर्ण डीपफेक के प्रसार से निपटने के प्रयासों का समन्वय करना शामिल हो सकता है।

चिता

श्रीमती दीपा बिश्वास
लैब टेक्नीशियन(पीजी-II)
डीवीसी, मैथन डैम

आमि सेই নারী,সেই কোন মরা অতীতেরপাড় হতে ভেসে আসেমোর আর্ত চিৎকারআমি নারী ই ই ই....শুনতে কি পাও তোমারা?যেদিন মরা স্বামীরহাড় ক খানা বুকে ধরেনেচে ছিলেম তোমাদের মাঝেতোমাদের লুব্ধ দৃষ্টিদেখেছিল আমার দেহবল্লরীশরীরের বিভঙ্গ,একবার ও কি ভেবেছিলেসেই ছিন্ন খঞ্জনা র কথাআমি সেই নারী ই ই...সতীত্ব প্রমানের জন্যযে দিন পাতাল প্রবেশ করে ছিলেম,লজ্জায় মুখ ঢাকোহে মূর্খের দল!তোমাদের ই বাঁচাবার জন্যআমি ই তো সেজেছিলেমদশ প্রহরণধারিনী দূর্গা,আমি সেই ই নারী।আমি গর্ভধারিনী, আমি ভগিনী,আমি জায়া, আমি কুরুক্ষেত্র এরপাশার ঘুঁটি, আমি চার বছরের ছোট্ট শিশু, আমি নির্ভয়া,তবে কেন ভাবো তোমরাআমি শুধু ই ভোগ্যা, শুধু ই পণ্যা!আমি ও তো পারিতোমাদের মাঝে স্থান পেতেনিজের স্বকীয়তায়।তবে কেন বারবারপুড়ে যেতে হবেচিতার আগুনেচিত্ত শুদ্ধি হতে!উত্তর দাও হে কালআমি যে নারী ই ই।।

तुम हो नारी

तुम हो नारी
ना हो अनाड़ी,
जीने का मोल,
सहन की शक्ति आता तुमसे ही हो,
जीना है जिस घर में,
अपने प्रेम से वो महकाती हो
तुम हो नारी
ना हो अनाड़ी ।
अब तो ज़मीन पर नहीं,
उड़ने की ख्वाब देखती हो,
मसनद चलाती हो,
देश को पथ दिखाती हो
तुम हो नारी
ना हो अनाड़ी ।
माता के रूप में संसार,
जिंदगी के पथ पर तुम्हारी कर्तव्य,
यह सब के लिए सालाम
तुम हो नारी
ना हो अनाड़ी ।
चूड़ियां कलाई में हैं तो क्या,
कमज़ोर न हो तुम
मानवता की जड़ हो तुम,
तुमसे हार के भी नाज़ हैं
तुम्हारी मान से हमारा सम्मान है
तुम हो नारी
ना हो अनाड़ी, तुम्हें सालाम ।।

बरुण कुमार दत्ता
वरिष्ठ लागत लेखाकार
लेखा अनुभाग

डीवीसी
गतिविधियाँ

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

महिला दिवस, 2024 के शुभअवसर पर राजभाषा इ-पत्रिका (महिला विशेषांक), मार्च,2024 संस्करण का विमोचन किया गया

दामोदर घाटी निगम, कोलकाता में महिला दिवस,2024 का अनुपालन

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

दामोदर घाटी निगम में 22.03.2024 को विश्व बांग्ला कन्वेंशन सेंटर, न्यूटाउन कोलकाता में एक ओ एंड एम सम्मेलन 2024 का आयोजन किया गया । सम्मेलन में विद्युत क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री एस. सुरेश कुमार, भा.प्र.से., अध्यक्ष, डीवीसी ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

डीवीसी
गतिविधियाँ

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

दुर्गापुर ताप विद्युत केंद्र में दिनांक 21.03.2024 को नराकास स्तरीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया

दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र प्रबंधन द्वारा तिमाही रिपोर्ट एवं राजभाषा संसदीय समिति निरीक्षण प्रश्नावली विषय पर 20 मार्च 2024 तेजस भवन के सम्मेलन कक्ष मे राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया

डीवीसी
गतिविधियाँ

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सशक्त बनाने , निगम प्रतिष्ठानों में राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा कार्यालयी कार्य में गति लाने के उद्देश्य से 19 मार्च 2024 को सम्मेलन कक्ष तकनीकी भवन, बोताविके में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) दुर्गापुर ईस्पात ताप विद्युत केंद्र में 18 फरवरी 2024 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पदनाम

Accommodation Officer	आवास अधिकारी	Chairman	अध्यक्ष
Accountant	लेखाकार	Chemist	रसायनज्ञ
Accountant General	महालेखाकार	Chief Engineer	मुख्य अभियंता
Account Officer	लेखा अधिकारी	Commissioner	आयुक्त
Additional Secretary	अपर सचिव	Consultant	परामर्शदाता
Administrative Officer	प्रशासनिक अधिकारी	Chief Vigilance Officer	मुख्य सतर्कता अधिकारी
Administrator General	महाप्रशासक	Controller of Stores	भंडार नियंत्रक
Adviser	सलाहकार	Deputy Manager	उप प्रबंधक
Advocate	अधिवक्ता	Director General	महानिदेशक
Advocate General	महाअधिवक्ता	Senior Manager	वरिष्ठ प्रबंधक
Allotment Officer	आबंटन अधिकारी	Manager	प्रबंधक
Ambassador	राजदूत	Executive	कार्यपालक
Anaesthetist	संज्ञाहरणविज्ञानी	Executive Director	कार्यपालक निदेशक
Analyst	विश्लेषक	Office Superintendent	कार्यालय अधीक्षक
Announcer	उद्घोषक	Member Secretary	सदस्य सचिव
Apprentice	शिक्षु	Member- Finance	सदस्य- वित्त
Achaeologist	पुरातत्वविद	Member -Technical	सदस्य-तकनीकी
Architect	वास्तुविद	Public Relation Officer	जनसंपर्क अधिकारी
Archivist	पुराभिलेखाविद	Discipline Officer	अनुशासन अधिकारी
Assistant Controller	सहायक नियंत्रक	Enquiry Officer	जांच अधिकारी
Assistant Secretary	सहायक सचिव	General Manager	महाप्रबंधक
Assistant Manager	सहायक प्रबंधक	Operator	प्रचालक
Attendant	परिचर	Protocol Officer	नयाचार अधिकारी
Auditor	महालेखापरीक्षक	Security Officer	सुरक्षा अधिकारी
Chargehand	कार्यवेक्षक	Safety Officer	संरक्षा अधिकारी
Chancellor	कुलाधिपति	Registration Officer	पंजीयन अधिकारी

राजभाषा क्रियान्वयन हेतु दुर्गापुर ईस्पात ताप विद्युत केंद्र, कोडरमा ताप विद्युत केंद्र, रघुनाथ ताप विद्युत केंद्र, मेजिया ताप विद्युत केंद्र में वितरित सहायक हिंदी पुस्तकों की सूची (वित्त वर्ष 2023 -24)

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक
1	मृदुला गर्ग की लोकप्रिय कहानियाँ	मृदुला गर्ग
2	ऋता शुक्ल की लोकप्रिय कहानियाँ	ऋता शुक्ल
3	चित्रा मुद्गल की लोकप्रिय कहानियाँ	चित्रा मुद्गल
4	लेन-देन	शरतचंद्र
5	गृहदाह	शरतचंद्र
6	बिन्दो का लड़का	शरतचंद्र
7	रणजी का शानदार बल्ला और अन्य कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
8	परियोंवाली पहाड़ी और अन्य कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
9	21 बाल कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
10	पालतु बाघ और अन्य कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
11	रस्किन बॉण्ड की कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
12	सुनो बच्चो, मेरी प्रिय कहानियाँ	रस्किन बॉण्ड
13	चन्द्रनाथ वैरागी	शरतचंद्र
14	देहाती समाज	शरतचंद्र
15	सविता	शरतचंद्र
16	अभागी का स्वर्ग	शरतचंद्र
17	सती बिलासी	शरतचंद्र
18	देना पावना	शरतचंद्र
19	दत्ता	शरतचंद्र
20	बिराज बहू	शरतचंद्र
21	औपचारिक पत्र-लेखन	ओमप्रकाश सिंहल
22	शहनाई और चिता	दुर्गा प्रसाद "आशा"
23	कार्यालयीन हिंदी	डॉ कैलाश नाथ पाण्डेय
24	टेलीफिल्म: निर्माण-कला पटकथा लेखन, फिल्मांकन एवं निर्देशन	विवेकानंद
25	हिंदी युग-युग की भाषा	रमेश चन्द्र

राजभाषा क्रियान्वयन हेतु दुर्गापुर ईस्पात ताप विद्युत केंद्र, कोडरमा ताप विद्युत केंद्र, रघुनाथ ताप विद्युत केंद्र, मेजिया ताप विद्युत केंद्र में वितरित सहायक हिंदी पुस्तकों की सूची (वित्त वर्ष 2023 -24)

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक
26	अनुवाद विमर्श- मौलिक चिंतन	डॉ पूरनचंद टंडन
27	हिंदी नवरत्न- अर्थात हिंदी के नव सर्वोत्कृष्ट कवि	वेंकटेश कुमार
28	सेतु समग्र:कविता	मगलेश डबराल
29	अँधेरी रात के तारे	किशन सिंह चावड़ा
30	एक दीप जला कर देखो	प्रो. प्रेम शर्मा
31	निर्वाचित कहानियाँ	सआदत हसन मंटो
32	भविष्य के कोरे पृष्ठों पर	सत्यप्रकाश दुबे
33	अनोखा बंधन	नरेश अनुरागी
34	क्रांतिकारी (नेताजी सुभाष चन्द्र बोस)	शैली साव
35	रविन्द्र नाथ टैगोर	अनिंद्य गंगोपाध्याय
36	अकबर बीरबल की कहानियाँ	शैली साव
37	जयशंकर प्रसाद (निर्वाचित कहानियाँ)	मृत्युंजय पाण्डेय
38	शब्दों की आँख	डॉ ऋषिकेष रॉय
39	प्रेमचंद (निर्वाचित कहानियाँ)	मृत्युंजय पाण्डेय
40	अंतिम मिलन	दुर्गा प्रसाद 'आश'
41	अंग्रेजी-हिंदी प्रशासनिक कोश	कैलाशचंद्र भाटिया
42	स्वप्नपाश	मनीषा कुलश्रेष्ठ
43	अरण्य में सूरज	अजित गुप्ता
44	शुद्ध हिंदी कैसे बोले कैसे लिखे	पृथ्वीनाथ पाण्डेय
45	सामयिक प्रयोजनमूलक हिंदी	पृथ्वीनाथ पाण्डेय
46	भारतीय ग्रामीण जीवन की कहानियाँ	प्रेमचंद
47	भारतीय सामजिक जीवन की कहानियाँ	प्रेमचंद
48	देवनागरी लिपि और राजभाषा हिंदी	रमेश चंद्र
49	राजभाषा हिंदी और तकनिकी अनुवाद	रमेश चंद्र

राजभाषा क्रियान्वयन हेतु दुर्गापुर ईस्पात ताप विद्युत केंद्र, कोडरमा ताप विद्युत केंद्र, रघुनाथ ताप विद्युत केंद्र, मेजिया ताप विद्युत केंद्र में वितरित सहायक हिंदी पुस्तकों की सूची (वित्त वर्ष 2023 -24)

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक
50	अदम्य उत्साह	डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
51	आसमान से ऊँची उड़ान	डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
52	श्रीकांत भाग-1	शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय
53	श्रीकांत भाग-2	शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय
54	अँजुरी भर फूल	अजित कुमार
55	दूसरी जीवन कृष्णा सोबती की जीवन	गिरधर राटी
56	सीढियों से उतारते हुए	अशोक वाजपेयी
57	द लॉ ऑफ़ एट्राकशन	एस्थर एंड जैरी हिक्स
58	शिवाजी के मैनेजमेंट सूत्र	प्रदीप ठाकुर
59	अरबपतियों जैसा कैसे सोचें?	प्रदीप ठाकुर
60	गुदगुदी (एक सामजिक कार्यकर्ता की जीवनगाथा	चंडी प्रसाद भट्ट
61	अद्यतन भाषाविज्ञान प्रथम प्रामाणिक विमर्श	पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'
62	भूमंडलीकरण और हिंदी	कल्पना वर्मा
63	सोना और खून-1	आचार्य चतुरसेन
64	सरकारी कार्यालयों में हिंदी की प्रयोग	गोपीनाथ श्रीवास्तव
65	सोना और खून -2	आचार्य चतुरसेन
66	सोना और खून -3	आचार्य चतुरसेन
67	सोना और खून -4	आचार्य चतुरसेन
68	महाराणा	ओमेन्द्र रलू
69	लोकतंत्र, राजनीति और धर्म	ए. सूर्य प्रकाश
70	अनुवाद की प्रक्रिया तकनीक और समस्याएं	डॉ श्रीनारायण समीर
71	मानस पर्याय शब्दकोश	वीरेंदर शर्मा
72	वस्तुनिष्ट हिंदी भाषा एवं साहित्य	छबिल कुमार मेहेर
73	भगत सिंह कुछ अधखुले पन्ने	राजशेखर व्यास
74	सामयिक प्रशासनिक कार्यविधि	गोपीनाथ श्रीवास्तव
75	शहीदों की छाया में	राम कृष्ण खत्री

राजभाषा क्रियान्वयन हेतु दुर्गापुर ईस्पात ताप विद्युत केंद्र, कोडरमा ताप विद्युत केंद्र, रघुनाथ ताप विद्युत केंद्र, मेजिया ताप विद्युत केंद्र में वितरित सहायक हिंदी पुस्तकों की सूची (वित्त वर्ष 2023 -24)

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक
76	सुभाष चन्द्र बोस कुछ अधखुले पन्ने	राजशेखर व्यास
77	हिंदी: आकांक्षा और यथार्थ	डॉ श्रीनारायण समीर
78	अनुवाद विज्ञान	भोलानाथ तिवारी
79	हिंदी कहानी: अंतर्वस्तु का शिल्प	राहुल सिंह
80	जीवन@चक्रव्यूह	ज्ञान प्रकाश सिंह
81	झारखण्ड की लोक कथाएँ	डॉ मयंक मुरारी
82	गोवा की लोक कथाएँ	जयंती नायक
83	महाराष्ट्र की लोक कथाएँ	दीपक हनुमंत राव जेवणे
84	उत्तर प्रदेश की लोक कथाएँ	विद्या बिंदु सिंह
85	अरुणाचल प्रदेश की लोक कथाएँ	नन्द किशोर पाण्डेय /हरीश कुमार शर्मा
86	तमिलनाडु की लोक कथाएँ	ए. भवानी
87	आंध्र प्रदेश की लोक कथाएँ	एस. शेषारत्नम
88	हरियाणा की लोक कथाएँ	निशा
89	केरल की लोक कथाएँ	एस तकमनी अम्मा
90	कर्नाटक की लोक कथाएँ	बी वै ललिताम्बा
91	गुजरात की लोक कथाएँ	राघवजी मधाड
92	हजारीप्रसाद द्विवेदी- एक जागतिक आचार्य	श्रीप्रकाश शुक्ल
93	दस्तकें	उदयन वाजपेयी
94	सार्थक संवाद	डॉ हिमांशु द्विवेदी
95	तकनीक तेरे कितने आयाम	बालेन्दु शर्मा दाधीच
96	भक्तिधारा के प्रतिनिधि	डॉ ऋषिकेश राय
97	तकनीक तेरे कितने आयाम	बालेन्दु शर्मा दाधीच
98	चरित्रहीन	शरतचंद्र
99	कार्यालय कार्यबोध	हरिबाबू कंसल
100	पानी पर लकीर	उषाकिरण खान
101	रतनारे नयन	उषाकिरण खान
102	कथा प्रस्थान (इक्कीसवीं सदी की कहानियाँ)	सूर्यनाथ सिंह
103	गोरा	रविन्द्रनाथ टैगोर

राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

मार्च, 2024 माह में सेवानिवृत्त कर्मियों की सूची

क्रम सं	नाम	पदनाम	विभाग	केंद्र
1.	श्री उपेन्द्र कुमार	उप प्रबंधक (विद्युत)	ट्रांसमिशन	ट्रांसमिशन (हजारीबाग)
2.	श्री स्टालिन रमेश कुमार	प्रबंधक (प्रशासनिक अधिकारी)	सतर्कता	कोलकाता
3.	श्री रणजीत प्रकाश गुप्ता	सहायक प्रबंधक (प्रशासनिक अधिकारी)	सीएलडी	मैथन
4.	श्री तापस कुमार लोध	सहायक प्रबंधक (भूसंवि)	भूसंवि	हजारीबाग
5.	श्री गिरीजेश्वर प्रसाद	सहायक प्रबंधक (भूसंवि)	सीएसआर	मैथन
6.	श्री रमेश कुमार रजक	कार्यपालक(उपकरण)	सीएंडआई	सीटीपीएस
7.	श्री स्वपन नस्कर	कार्यपालक (सचिव)	सीएंडएम	कोलकाता
8.	श्री नकुल राम	सहायक प्रबंधक (विद्युत)	ओएंडएम	केटीपीएस
9.	श्री जयदीप बिस्वास	प्रबंधक (भूसंवि)	भूसंवि	हजारीबाग
10.	श्री अजीत कुमार वर्मा	वरिष्ठ भंडारपाल [पीजी]	सीएंडएम	बीटीपीएस
11.	श्री मोहन चटर्जी	तकनीकी सहायक	ओएंडएम	सीटीपीएस
12.	श्री काशी नाथ शील	कार्यालय अधीक्षक (पीजी -1)	मानव संसाधन	कोलकाता
13.	श्री आर.सी. पासवान	तकनीकी सहायक	भूसंवि	हजारीबाग
14.	श्रीमती कमला कुमारी	नर्सिंग सिस्टर (पीजी)	चिकित्सा	बीटीपीएस
15.	श्री पीयूष कांति घोष	चार्ज हैंड (लाइन्स)(पीजी)	सचिवालय	कोलकाता
16.	श्री बरुण के.आर. घोष	सहायक	प्रणाली	टीएससी (मैथन)
17.	श्री असित कुमार मंडल	तकनीकी सहायक ग्रेड-III	ओएंडएम	एमटीपीएस
18.	श्री धनंजय दास	खलासी	प्रणाली	ट्रांसमिशन (दुर्गापुर)
19.	श्री अनिमेष चक्रवर्ती	कनिष्ठ मजदूर	मानव संसाधन	डीटीपीएस
20.	श्री तायपद गंगोपाध्याय	कनिष्ठ संदेशवाहक	ओएंडएम	एमटीपीएस
21.	श्री जवाहर लाल कैबर्त्य	कैंटीन कर्मी	मानव संसाधन	सीटीपीएस

मार्च, 2024 माह में नए आगंतुकों का स्वागत

क्रम सं.	नाम	पदनाम
01	श्री राजेश कुमार	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
02	श्री दिवाकर ट्विनवाल	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
03	श्री चिरंजीब गोराईं	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
04	श्री शोभित तिवारी	कार्यपालक प्रशिक्षु (यांत्रिकी)
05	श्री राहुल कुमार	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
06	श्री दीपक भगत	कार्यपालक प्रशिक्षु (यांत्रिकी)
07	श्री कौशिक रॉय	कार्यपालक प्रशिक्षु (यांत्रिकी)
08	श्री शुभंकर विश्वास	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
09	श्री अमित कुमार	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)
10	सुश्री नितु देवरी	कार्यपालक प्रशिक्षु (यांत्रिकी)
11.	श्री जॉनसन केरकेट्टा	कार्यपालक प्रशिक्षु (विद्युत)